संपादकीय

आज हमारे समाज में चारों ओर भ्रष्टाचार, हिंसा, अराजकता का शोर गूँज रहा है। लड़कियों और महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। किशोरों में आपराधिक प्रवृत्ति ज़्यादा पाई जा रही है और इन सभी चुनौतियों के हल के रूप में शिक्षा की ओर ही देखा जा रहा है। चारों ओर से स्वर गूँज रहा है कि शैक्षिक पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जिसमें सभी सामाजिक सरोकार शामिल हों। शिक्षा का दायरा और बड़ा किया जाए, जिसमें समाज के ऐसे वर्गों को भी शामिल किया जाए जो कई बार असामाजिक गतिविधियों में भागीदार होने के कारण बिलकुल अलग-थलग छूट जाते हैं। हमारा इस बार का अंक इन्हीं सरोकारों को पिरोता हुआ एक पहल के रूप में दो ऐसे लेख शामिल कर रहा है जिसमें शिक्षा को बाल अपराधियों तथा कैदियों के सुधार के महत्वपूर्ण आयाम की तरह देखा गया है। ये दो लेख हैं- धर्मराज सिंह और बबिता सिंह द्वारा लिखा गया ''लखनऊ बाल सुधार गृह के बाल अपराधियों के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन'' तथा भानुप्रताप सिंह द्वारा लिखित ''कैदियों के लिए उच्च शिक्षा: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की एक पहल''। आगे बढ़ते हुए हमारा यह अंक मानव अधिकार शिक्षा की समस्याओं पर भी प्रकाश डालता है। इससे संबंधित शंकर शरण का लेख कर्तव्य और अधिकार के बीच के संबंध को जाँचने की कोशिश करता है। जब कभी शिक्षा को गहन रूप से सुधारक की भूमिका में देखा जाता है तो विद्वानों के विचारों का महत्त्व और अधिक मुखर और प्रासंगिक हो उठता है। श्री अरविन्द, महात्मा गाँधी, रवींद्रनाथ टैगोर, डॉ. जाकिर हुसैन इत्यादि विचारकों के विचारों से शिक्षा को सदा ही मार्गदर्शन मिलता रहा है। इस अंक में शामिल अरुण कुमार वर्मा द्वारा लिखित लेख ''स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा संबंधी विचार : सार्थकता एवं प्रासंगिकता'' में दिए गए वक्तव्यों में आज भी एक नई ताजगी और स्फूर्ति परिलक्षित होती है। मूल्यांकन आज ज्वलंत विषय के रूप में सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में चर्चा का विषय बना हुआ है। मूल्यांकन की नई विधाओं और उपागमों के बारे में सर्वत्र चर्चा है। इस अंक में शामिल अजीत कुमार राय एवं सतीश कुमार विश्वकर्मा का लेख ''सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रभावी क्रियान्वयन: शिक्षकों का आत्म सामर्थ्य'' मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षकों के सामर्थ्य की महती भूमिका के विषय में चर्चा करता है। नागेन्द्र कुमार का लेख ''विश्वविद्यालयी केंद्रीय

मूल्यांकन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' भी उच्च शिक्षा के स्तर पर मूल्यांकन की चुनौतियों और सरोकरों को हमारे समक्ष रखता है।

इस अंक में शिक्षा-संबंधी कुछ अन्य लेख भी शामिल हैं, जो विविध विषयों, जैसे-कक्षागत शिक्षण, सरकार द्वारा चलायी गई शैक्षिक योजनाएँ स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की दशा इत्यादि पर प्रकाश डालते हैं।

भाषा में शब्द और अर्थ के संबंधों को बारीकी से विश्लेषित करता हुआ लक्ष्मीनारायण मित्तल का लेख ''शब्द और अर्थ'' भाषा की विभिन्न विमाओं को सामने रखता है। इन लेखों के अतिरिक्त इस अंक में रामविलास शर्मा की कृति ''भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास'' पर दिव्यानन्द द्वारा लिखी गई पुस्तक समीक्षा भी शामिल है। इसके साथ ही एक बार पुन: आपके सुझावों की प्रतीक्षा में।

अकादमिक संपादकीय समिति